International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 01, January - March, 2021, pp.257-262

शिक्षक शिक्षा में बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के लिए स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रासंगिकता

रितु बाला*
डॉ. सी.पी. पालीवाल**

प्रस्तावना

व्यावसायिक कुशलता के लिए सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान का होना अत्यंत आवश्यक है। सैद्धान्तिक ज्ञान व्यक्ति में वैचारिक दृष्टिकोण विकसित करता है, वहीं व्यावहारिक ज्ञान उसे अनुभव प्रदान करता है जिसके माध्यम से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित होता है। व्यावसायिक कुशलता के लिए आवश्यक है, व्यक्ति को व्यावसायिक एवं व्यावहारिक ज्ञान आवश्यक रूप से हो। व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति और व्यावहारिक ज्ञान के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रम चलाये जाते हैं, उनमें से एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है स्थानबद्ध प्रशिक्षण। स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थी चयनित व्यवसाय से जुड़े हुए प्रत्येक पहलू से परिचित होता है तथा विभिन्न शैक्षिक व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन सीखता है। स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों में जैसे– चिकित्सा क्षेत्र, अभियांत्रिकी क्षेत्र आदि में पहले से ही संचालित हो रहे है। इस प्रकार व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण समयावधि है। इसी को ध्यान में रखकर भावी अध्यापकों की शिक्षण सक्षमता को उन्नयित करने के लिए शिक्षक शिक्षा में स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम को अनिवार्य कर दिया गया है। जिससे शिक्षक शिक्षार्थियों में शिक्षा के व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके।

शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के स्व–अधिगम व स्वतंत्र चिंतन की क्षमता का विकास करने के लिए यशपाल समिति (1992) ने शिक्षा की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रासंगिक एवं व्यावहारिक बनाने पर मुख्य जोर दिया। भावी अध्यापकों की शिक्षण सक्षमता के उन्नयन के लिए प्रत्येक घटक के प्रति जागरूक करना है, क्योंकि विद्यालयी गतिविधियों का संचालन उनमें मौजूद शिक्षकों की शिक्षण–सक्षमता पर निर्भर है, उनके कक्षागत व्यवहार का अनुकरण विद्यार्थियों की निष्पत्तियों के रूप में झलकता है।

शिक्षक–प्रशिक्षण की दयनीय एवं दुर्बल स्थिति से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परिचित है। जिसे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित जस्टिस वर्मा आयोग (2012) ने अपनी रिपोर्ट में वैद्यानिक रूप से प्रमाणित किया कि अध्यापक प्रशिक्षण में ज्ञान के कुछेक अंशो का इस्तेमाल पारस्परिक रूप से किया जाता है। जिसका कक्षागत व व्यावहारिक परिस्थितियों से भी कोई संबंध नहीं हो पाता है। वर्तमान चुनौतीपूर्ण अस्थिरता के दौर में कुछ अध्यापक तल्लीनता एवं शालीनता के साथ अपने उत्तरदायित्वों को लगन व कर्मठता से निर्वहन कर रहे है। ऐसे अध्यापक समाज में बच्चों को दिशा देने में अपनी सृजनात्मक मनोवृत्ति के साथ योगदान दे रहे है।

भावी अध्यापकों के प्रशिक्षण में सुधार कर उसे सुचारू बनाने के लिए एन.सी.एफ.टी.ई. रेगुलेशन (2014) के अलावा आर.टी.ई. एक्ट (2009) में भी शिक्षण–सक्षमता की जरूरतों पर बल दिया गया। वर्तमान में अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के पुनर्गठन में नवीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को विद्यालयी अनुभवों के दर्शन तथा

* शोधार्थी, राजर्षि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।
** प्राचार्य, आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण, महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान एवं शोध निर्देशक, राजर्षि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

बालकों की संवेगात्मक जरूरतों का पाठ्यचर्या के घटकों पर पडने वाले प्रभाव को समझते हुए, शिक्षण अधिंगम प्रक्रिया की परिस्थितियों का अवलोकन करना है, ताकि वे पाठ–योजना, नियोजन शिक्षण तथा मूल्यांकन कर विद्यार्थियों व समुदाय के सदस्यों के बीच सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम हो पाएँ।

इसी क्रम में शिक्षक शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (बी.एड़) में भी स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम को वर्ष (2014) में एन.सी.टी.ई. ने अनिवार्य कर दिया। द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रथम वर्ष में 24 दिन एवं द्वितीय वर्ष में 96 दिन के लिए स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम को रखा गया। स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा भावी शिक्षकों को शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने एवं शैक्षिक व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए कई प्रकार के घटकों को इस कार्यक्रम में शामिल किया गया है।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से प्रशिक्षणार्थी विद्यालयी परिवेश से परिचित होने के साथ–साथ अपने प्रयोगात्मक कार्यो को पूर्ण करते है जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में बढ़ोतरी भी होती है साथ ही शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न कौशलों का अर्जन करते है।

- **शिक्षक शिक्षा –** शिक्षक शिक्षा का सम्बन्ध सेवापूर्व प्रशिक्षणार्थियों को दी जाने वाली ऐसी शिक्षा अथवा ज्ञान से है जिसे प्राप्त करके वे शिक्षण की समस्त विधियों, प्रविधियों एवं शिक्षण कौशलों की संपूर्ण जानकारी प्राप्त करते है। शिक्षण प्रक्रिया का सम्बन्ध बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास से होता है जबकि प्रशिक्षण शब्द का प्रयोग किसी विशिष्ट क्षेत्र में कुशलता अर्जित करने के सम्बन्ध में किया जाता है।
- **बी.एड़ प्रशिक्षणार्थी –** वह व्यक्ति है जो किसी शिक्षण संस्थान में शिक्षक बनने हेतु आवश्यक डिग्री लेने के लिए नामांकित होता है तथा निर्धारित पाठ्यक्रम को निर्धारित समय में पूर्ण कर शिक्षक शिक्षा में डिग्री प्राप्त करता है।

शिक्षा कोष के अनुसार बी.एड़ (Bachelor of Education) अर्थात शिक्षा में स्नातक उपाधि। शिक्षा में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के लिए द्विवर्षीय पाठयक्रम निर्धारित है। इन दो वर्षो में प्रशिक्षणार्थियों को सेवापूर्व शिक्षक की सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक जानकारी प्रदान की जाती है। बी.एड़ के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रशिक्षणार्थी शिक्षण के विभिन्न कौशलों को सीखकर भावी शिक्षक बनने के लिए तैयार होता है।

- **स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम :–** (i) किसी व्यावसायिक शिक्षा में एक ऐसा अनुभव आधारित शैक्षणिक कार्यक्रम है जिसके द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को वास्तविक कार्यक्षेत्र (विद्यालय) में निश्चित समयावधि में रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करना होता है। (ii) किसी स्थान विशेष (विद्यालय) में रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करने का कार्यक्रम है। जिसे बी.एड के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में संचालित किया जाता है।

शिक्षा मानव के विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य में विवेकपूर्ण निर्णयन एवं समस्याओं के निराकरण की क्षमता सृजनात्मकता व सकारात्मक दृष्टिकोण आदर्श मूल्यों, विचारधाराओं तथा अपना जीवन यापन करने के लिए विशेष व्यवसाय के प्रति अभिरूचि व कार्यकुशलता आदि का विकास होता है। मानव के विकास की प्रत्येक अवस्था में शिक्षा अति महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा मानव में आधारभूत आवश्यक गुणों व दक्षताओं के विकास के लिए केन्द्र के रूप में कार्य करती है। इस प्रकार मनुष्य के जीवन स्तर के अनुसार शिक्षा के केन्द्र के रूप में कार्य करती है। इस प्रकार मनुष्य के जीवन स्तर के अनुसार शिक्षा के स्वरूप को भी स्तरीकृत किया गया है, प्राथमिक माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा। उच्च शिक्षा अकादमिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के रूप में दो प्रकार के कार्यक्रमों को संचालित करती है।

व्यावसायिक शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसके द्वारा व्यक्ति को एक विशिष्ट व्यवसाय के लिए तैयार किया जाता है। व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा मनोगत्यात्मक पक्षों का विकास किया जाता है तथा विशिष्ट व्यवसाय से संबंधित विशिष्ट ज्ञान व कौशल भी प्रदान किया जाता है।

अतः प्रत्येक व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थियों को नवीन ज्ञानयुक्त एवं व्यावसायिक दक्षताओं के उच्चतम स्तर पर पहुंचाने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं व्यवसाय विशिष्ट योग्यताओं व विशेषताओं को विद्यार्थियों में विकसित करने के लिए विश्वविद्यालयों एवं व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों के द्वारा समय–समय पर विभिन्न प्रकार के एवं विशिष्ट नवाचार से युक्त कार्यक्रमों का संचालन किया जाता रहा है जिससे विद्यार्थियों के ज्ञान व दक्षता में निरंतर वृद्धि एवं नवीनता आती रहे तथा विशिष्ट कार्यक्रम के रूप में स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम (Internship) भी व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों में एक विशिष्ट उद्देश्य के साथ सम्मिलित किया गया है। स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम (Internship) सर्वप्रथम चिकित्सा क्षेत्र में प्रयोग किया गया। जिसमें एक नव चिकित्सक को व्यावहारिक ज्ञान किसी कुशल, विद्वत व प्रतिष्ठित चिकित्सक के निर्देशन में निर्धारित अवधि तक प्राप्त करना होता है। इसके बाद ही वह स्वतंत्र चिकित्सक के रूप में कार्य कर सकता है। तत्पश्चात क्रमशः इसे अन्य व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों में भी सम्मिलित कर दिया गया।

इसी क्रम में शिक्षक शिक्षा में सेवापूर्व कुशल अध्यापकों का सृजन करने के लिए उनमें व्यावसायिक दक्षताओं का विकास करने के लिए एन.सी.टी.ई. द्वारा द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में निश्चित समयावधि (120 दिन) के लिए प्रशिक्षणार्थियों को विद्यालयों में स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल कर दिया गया।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम (Internship) – स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम का अर्थ किसी समर्थवान पर्यवेक्षक के निर्देशन में व्यावहारिक ज्ञान व अनुभव प्राप्त करने को समाहित करता है। जिसमें विद्यार्थी अपने सैद्धान्तिक ज्ञान का जिसे उसने कक्षाओं में सीखा है, उसका परीक्षण करता है। यहॉ स्थानबद्ध प्रशिक्षण में वे सभी महत्वपूर्ण अनुभव सम्मिलित है जो वास्तविक कार्यक्षेत्र में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त किये जाते है। यह कार्यक्रम सार्थक कौशलों का विकास करने के साथ–साथ विद्यार्थियों में संबंधित व्यवसाय के प्रति संवेदनशील एवं विशिष्ट अभिवृत्ति का भी विकास करता है।

मैकमोहनयू एण्ड कवीन यू (1995) ने कहा है कि स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम निरीक्षण योग्य कार्यानुभव है। जिसमें विद्यार्थी अपने संस्थान को छोड़ता है और कार्य आधारित कार्यक्रमों में व्यस्त हो जाता है एवं उस समयावधि के दौरान वे उस पेशे में उपस्थित आश्रयी द्वारा बारीकी से निरीक्षित किये जाते है।

फ्यूरको (1996) के अनुसार ''इन्टर्नशिप को विद्यार्थियों को सेवा गतिविधियों में व्यस्त रखने या लगाये रखने के कार्यक्रम के रूप में परिभाषित किया गया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य उन्हें कार्य आधारित अनुभव प्रदान करना एवं उनके अन्दर क्षेत्र विशेष से संबंधित प्रासंगिक मुद्दो की समझ या ज्ञान में वृद्धि करना है।''

अतः किसी भी व्यावसायिक शिक्षा में स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए एक उपयोगी एवं लाभकारी घटक है।

मानवीय संसाधनों को शिक्षित करना तथा उनका सर्वांगीण विकास करना विद्यालय का दायित्व है। विद्यालय में प्रायः यह देखा जा रहा है कि शिक्षकों का रवैया विद्यालय की कक्षागत क्रियाकलापों में सकारात्मक नहीं है, इस कारण विद्यार्थी शिक्षण विषय की स्पष्ट अवधारणा ग्रहण नहीं कर पाते है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा निर्माण (एन.सी.एफ.–2005) में शिक्षक की एक मननशील पेशेवर के रूप में संकल्पना की गयी है। एन.सी.टी.ई. ने इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षक तैयार करने हेतु बी.एड़ पाठ्यक्रम को दो वर्ष का निर्धारित किया एवं शिक्षण कार्य के सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए वास्तविक कार्यक्षेत्र (विद्यालय) में स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करने हेतु दिशा–निर्देश दिए, जिससे कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षक तैयार हो सके तथा उनमें व्यावहारिक गुण विकसित हो, उनमें व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यालय में समावेशीय अभिवृत्ति एवं नवीन शैक्षिक कौशलों का विकास हो।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा प्रशिक्षणार्थियों में व्यावसायिक कार्यकुशलता में वृद्धि होती है। प्रशिक्षणार्थी सभी शैक्षिक कौशलों से परिचित हो जाता है। शिक्षक प्रशिक्षणार्थी उन सभी क्रियाकलापों से अवगत हो जाता है जो विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास कर सके और शैक्षिक व्यवसाय में आने वाली चुनौतियों एवं समस्याओं से निपट सके। साथ ही एक कुशल राष्ट्र निर्माता के तौर पर उसे स्थापित कर सके।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षणार्थी विद्यालयी परिवेश में शिक्षण कार्य को सीख रहे हैं वे विद्यालयी परिवेश में सामान्य एवं विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बालों के संपर्क में आते हैं जिसके द्वारा प्रशिक्षणार्थी विभिन्न शिक्षण कौशलों को सीख रहे हैं।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न शिक्षण समस्याओं के निराकरण हेतु प्रभावी कार्यक्रम जैसे– केस स्टडी, क्रियात्मक अनुसंधान विद्यालयी अभिलेखों की पूर्ति आदि के विषय में प्रत्यक्ष रूप से जानकारी प्राप्त की जाती है। स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षक शिक्षा के समस्त सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक उद्देश्यों की प्राप्ति है।

वर्तमान में प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक कार्यकुशलताओ में वृद्धि करने हेतु उन्हें समर्पित और कुशल अध्यापक बनाने के लिए पाठ्यक्रम में स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल करने से सेवापूर्व प्रशिक्षण को नवीन आयाम प्राप्त हुए है।

शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों के लिए उपयोगी एवं लाभकारी घटक है। प्रशिक्षणार्थी सीखने की अवस्था में होता है एवं जो ज्ञान वह ग्रहण कर रहा है उसी ज्ञान को वह कार्यस्थल पर जाकर क्रियान्वित करता है। स्थानबद्ध प्रशिक्षण अनुभवात्मक अधिगम का एक रूप है जो अध्येता द्वारा अभ्यासित ज्ञान व कौशल का वास्तविक व्यावसायिक कार्यक्षेत्रों के वास्तविक अनुभव प्रक्रियाओं की समझ एवं घटकों की जटिलता से प्रशिक्षणार्थियों को परिचित कराता है। इससे प्रशिक्षणार्थियों में कार्यकुशलता, समायोजन क्षमता, विचार एवं निर्णयन योग्यता उत्कृष्ट स्तर पर विकसित होने में मदद मिलती है। साथ ही अनेक स्वगुणो जैसे पहल, प्रवृत्ति, जोखिम उठाना, आत्मविश्वास एवं आत्म–सम्मान में भी वृद्धि होती है।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रत्यय मात्र प्रशिक्षणार्थियों से ही संबंधित नहीं है बल्कि यह व्यावसायिक, संस्थानों, सहयोगी प्रतिष्ठानों, नियोक्ताओं, अध्यापकों, सहयोगी पर्यवेक्षकों तथा व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों का एक सम्मिलित प्रयास होता है। जिसका संधानित दृष्टव्य लक्ष्य विद्यार्थियों, नियोक्ताओं, संस्थाओं एवं समाज को पूर्णतया लाभ पहुंचाना होता है। स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम में विद्यार्थी, संस्था एवं नियोक्ता के मध्य एक विशिष्ट प्रकार की अन्तः क्रिया व अर्न्तसम्बन्ध विकसित होता है।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम शैक्षणिक अधिगम प्रक्रिया में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान की खाई को पाटता है। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को सेवा गतिविधियों में व्यस्त रखते हुए उन्हें अभ्यासात्मक या व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जाता हैं जिससे उनके समझने की शक्ति में प्रासंगिक रूप से बढ़ोतरी होती है।

यह एक ऐसा निरीक्षणपूर्ण अनुभवात्मक कार्यक्रम है जिसमें विद्यार्थी का निरीक्षण अत्यन्त बारीकी पूर्वक किया जाता है। यह विद्यार्थी के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। इस निरीक्षण का प्रभाव जब विद्यार्थी अपने अनुभव को कार्यस्थल पर प्रयोग करते है उस समय दिखायी होता है क्योंकि वहॉ पर आने वाली समस्याओं को वह अच्छी प्रकार से हल करता है। स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों के ज्ञान आधार पर अभिप्रेरणा स्तर में सार्थक रूप से वृद्धि करने में योगदान देता है।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को विद्यालय अभिलेख नवीनतम शिक्षणा अधिनियम व संकल्पनाओं को समझने के अवसर मिलते है। इसके द्वारा भावी शिक्षकों को कैरियर से संबंधित दिशा–निर्देश प्राप्त होते हैं एवं प्रयोगात्मक अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

इस कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षाणार्थी सफलतापूर्वक अपने व्यक्तिगत कौशल, तकनीकी ज्ञान, समय व्यवस्थापन, सम्प्रेषण कौशल, समूह कार्य में परिपक्वता प्राप्त करते है।

परन्तु क्या प्रशिक्षणार्थी स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों को पूर्ण कर पा रहे है। क्या वे वास्तव में विद्यालयी अनुभवों को व्यावहारिक रूप में प्राप्त कर रहे हैं स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान जिन गतिविधियों एवं अभिलेखों की जानकारी उन्हें दी जानी चाहिए क्या वो जानकारी वास्तव में उन्हें प्राप्त हो रही है ? विभिन्न गतिविधियों एवं अभिलेखों की जानकारी प्रदान करने की बजाय उन्हें अध्यापकों द्वारा अन्य कार्यो की

स्थानीय पूर्ति हेतु व्यस्त रखा जाता है। क्या प्रशिक्षणार्थी सैद्धान्तिक पक्षों के साथ विद्यालयों की संस्कृति को समझने में समर्थ हो रहे है ? क्या वे कक्षा–शिक्षण पाठ्य सहगामी क्रियाओं विद्यालय प्रबन्धन व विद्यालय के अन्य पक्षों को समझने में सक्षम हो पाते है ? क्या प्रशिक्षणार्थी विद्यालय के शिक्षा तंत्र को समझने एवं विद्यालय की परिस्थितियों के अनुसार नवाचार की संभावना को खोजने में सफलता हासिल कर पाते है ? क्या प्रशिक्षणार्थी विभिन्न विषयों के शिक्षण की योजना बनाना व कक्षा में उसका क्रियान्वयन करने में दक्षता हासिल कर पाते है? क्या प्रशिक्षाणार्थी विद्यार्थियों से जुड़ पाते है उनको उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में समझ पाते है ? व उनसे प्रभावी तरीके से बातचीत कर पाने जैसे कौशल विकसित कर पाते है या नहीं ? प्रशिक्षणार्थी स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति सचेत व सजग है यह भी विचारणनीय प्रश्न है ?

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में भावी शिक्षकों के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यात्मक पक्ष उद्दीप्त हो सके इसके लिए शिक्षक शिक्षा में आवश्यकतानुसार संशोधन करके शिक्षक शिक्षा के द्विवर्षीय बी.एड़ प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम को शामिल किया गया है।

परन्तु स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों के लिए कितना प्रासंगिक व अर्थपूर्ण है यह विचारणीय प्रश्न है। शिक्षक शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि हेतु किये गये अन्य प्रकार के प्रयासों में शिक्षक शिक्षा की विभिन्न पाठ्यचर्याओं में प्रायोगिक अनुभवों को समृद्ध करने का प्रयास किया स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम प्रशिक्षणार्थी विद्यालय परिवेश में शिक्षण कार्य को बेहतर तरीके से सीख सकते है। वे विद्यालयी परिवेश में सामान्य एवं विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बालकों के संपर्क में आकर बालको की वैयक्तिक आवश्यकताओं को भली–भॉति समझकर नवाचारी शिक्षण विधियों को सीखते है। लेकिन प्रशिक्षणार्थी परंपरागत शिक्षण से भी वंचित रहते हैं। तकनीकी व अन्य सुविधाओं के अभाव में नवाचारी शिक्षण मात्र कल्पना ही रह जाता है।

प्रशिक्षणार्थियों को स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विद्यालयी गतिविधियों को ज्ञान वास्तविक परिस्थितियों में प्राप्त करने का अवसर मिलता हैं विद्यालयी परिवेश में रहकर प्रशिक्षणार्थी अपने शिक्षण कौशल को परिमार्जित करने का कार्य करते है।

परन्तु देखा गया है कि बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के लिए स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यधिक प्रभावी एवं व्यावसायिक हैं इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। परन्तु भावी अध्यापकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति, शिक्षण कौशलों का विकास व्यावसायिक दक्षता, पाठ–नियोजन तथा कक्ष–प्रबन्धन आदि के व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के स्थान पर कागज पूर्ति ही की जाती है। देखने में आया है कि स्वयं प्रशिक्षणार्थी भी यही प्रतीक्षा करते हैं कि हमें 24 अथवा 96 (120) दिन के स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए कब जाना है जिससे कि उनको नियमित चलने वाली सैद्धान्तिक कक्षाओं से अवकाश मिल सके।

प्रशिक्षणार्थी इस समयावधि की बेसब्री से प्रतीक्षा करते है और वे इस समयावधि का दुरूपयोग करते हैं। वास्तव में प्रशिक्षणार्थी स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यक गतिविधियों एवं कार्यो में भाग न लेकर स्वकार्यो में व्यस्त रहते हैं।

प्रशिक्षणार्थी की रूचि शिक्षण कौशलों एवं विभिन्न व्यावहारिक ज्ञान को ग्रहण करने में न होकर स्थानीय विद्यालय में जुगाड़ व्यवस्था करके मात्र उपस्थिति पूरी करवाने में होती है। प्रशिक्षणार्थी वास्तविक कार्यानुभव में रूचि न लेकर मात्र उपस्थिति प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु प्रयासरत रहते है। इस प्रकार की स्थिति शैक्षिक व्यवसाय में चिन्तनीय प्रश्न है।

शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के लिए व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये निर्धारित यह समयावधि उद्देश्यहीन और निरर्थक ही साबित हो रही है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में निर्धारित स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम की समयावधि को प्रशिक्षणार्थी अपने व्यावहारिक कौशलों एवं व्यावसायिक दक्षता हासिल करने की बजाय अन्य व्यर्थ के कार्यो में व्यतीत कर देते है। यह एक विचारणीय विषय है। ऐसे में प्रशिक्षण के वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति में बहुत बड़ी बाधा है। इसी के साथ यह भी संज्ञान में आता है कि स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विद्यालय संगठन एवं प्रबन्धन प्रशिक्षणार्थियों का पूर्ण सहयोग नहीं करते जिसके

कारण प्रशिक्षणार्थी वास्तविक रूप में विद्यालयों की संस्कृति को समझने में समर्थ नहीं हो पा रहे है। इसके साथ ही यह पाया गया कि स्कूल प्रबंधन प्रशिक्षणार्थियों को उचित दिशा निर्देशन प्रदान नहीं करता उनका मानना है कि प्रशिक्षणार्थियों को दिशा निर्देशित करना हमारा कार्य नहीं है। इस प्रकार वे प्रशिक्षणार्थियों को स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम में न तो सहयोग प्रदान करते है और न ही मार्गदर्शन देते है। इस प्रकार स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण से संबंधित जिन कौशलों एवं गुणों का विकास होना चाहिए वह नहीं हो पाता है। स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को अनेक प्रकार की कठिनाईयों एवं समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा क्या प्रशिक्षणार्थी कक्षा–शिक्षण पाठ्य सहगामी क्रियाओं, विद्यालय प्रबन्धन व विद्यालय के अन्य पक्षों को समझने में सक्षम हो पाते है ? क्या प्रशिक्षणार्थी विद्यालय के शिक्षा तंत्र को समझने एवं विद्यालय की परिस्थितियों के अनुसार नवाचार की संभावना को खोजने में सफलता हासिल कर पाते है ? क्या प्रशिक्षणार्थी विभिन्न विषयों के शिक्षण की योजना बनाना व कक्षा में उसका क्रियान्वयन करने में दक्षता हासिल कर पाते है ? क्या प्रशिक्षणार्थी विद्यार्थियों से जुड़ पाते है ? उनसे प्रभावी तरीके से बातचीत कर पाने जैसे कौशल विकसित कर पाते हैं या नहीं ? प्रशिक्षणार्थी स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति कितने सचेत व सजग है अथवा स्थानबद्ध प्रशिक्षण की अवधि को वे वास्तव में पूर्ण करते है या नहीं ? ये सभी विचारणीय प्रश्न है इन सभी प्रश्नों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध का विषय ''शिक्षक शिक्षा में स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति सेवारत शिक्षकों एवं बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के अभिमतों एवं जागरूकता स्तर का एक तुलनात्मक अध्ययन'' को शोध विषय के रूप में चुना गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

~ शास्त्री, शिव प्रसाद : 2006, अशोक मानक हिन्दी–शब्दकोष, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली।

~ शर्मा के.के., शर्मा प्रभा, त्रिवेदी सुधा, गर्ग ओ.पी. : 2005, शिक्षा शब्द कोष, स्वाती पब्लिकेशन्स, जयपुर।

~ त्रिपाठी प्रो0 मधुसूदन : 2007, भारतीय शिक्षा का विश्व कोष, खण्ड एक : भारतीय शिक्षा का इतिहास, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

~ शर्मा, एन.आर. कडवासरा ओम : 2007, शिक्षा मनोविज्ञान, साहित्य चन्द्रिका प्रकाशन, जयपुर।

~ भार्गव सुनीता, शर्मा मंजू, भारद्वाज कुमार रतन : 2007, शिक्षा मनोविज्ञान, अरिहंत शिक्षा प्रकाशन, टोंक फाटक, जयपुर।

~ मिश्र आत्मानन्द, गौतम काली चरण, कुमार राकेश : शिक्षा कोष, यूनिवर्सिटी, पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

~ पुरोहित नारायण जगदीश, व्यास हरिशचन्द्र : भावी शिक्षकों के लिए आधारभूत कार्यक्रम राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

~ रिजवी आबिद : मेगा हिन्दी शब्दकोष, मारूति प्रकाशन, हरी नगर, मेरठ।

~ शास्त्री, के.एन : अध्यापक शिक्षा, प्रेरणा प्रकाशन, रोहिणी, दिल्ली।

~ मुनेश डब्ल्यू, एस : 1963 : एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशन एण्ड रिसर्च, न्यूयॉर्क।

~ Indian Journal of Teacher Education Anweshika: December 2014, Volume–9, No. 1 NCTE, New Delhi.

~ www.phdportal.com

~ www.phdstudies.com

~ shodhganga.inflibnet.ac.in

~ shodhgangotri.inflibnet.ac.in.

❖◆❖